P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-10, ISSUE-1 August -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

नाथ सम्प्रदाय एवं गोरक्षनाथ का योग सिद्धान्त

Nath Sampradaya and the Yoga Theory of Gorakshanath

Paper Submission: 12/08/2021, Date of Acceptance: 23/08/2021, Date of Publication: 24/08/2021

बिंदु सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग,
कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, इटावा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भारतवर्ष के महान गुरू गोरक्षनाथ का आविर्भाव विक्रम संवत की 10वीं शताब्दी में हुआ था। शंकराचार्य के पश्चात् दूसरा कोई इतना प्रभावशाली महापुरूष भारतवर्ष में नहीं हुआ। आज भी भारतवर्ष के प्रत्येक कोने-कोने में उनके समर्थक पाए जाते हैं। भक्ति आंदोलन से पूर्व सबसे ज्यादा शक्तिशाली आंदोलन यदि कोई था तो वह गोरक्षनाथ का योग सिद्धांत ही था।

The great Guru of India, Gorakshanath appeared in the 10th century of Vikram Samvat. After Shankaracharya, there was no other such influential great man in India. Even today his supporters are found in every corner of India. Before the Bhakti movement, the most powerful movement, if any, was the Yoga theory of Gorakshanath.

मुख्य शब्द : नाथ, जोगी, योगी, नवनाथ, कनफरा, योग, पंथ।

Keywords: Nath, Jogi, Yogi, Navnath, Kangra, Yoga, Panth.

प्रस्तावना

गोरक्षनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे, उन्होंने जिस धातु को छुआ वह सोना हो गया। [1] उनके जन्म स्थान के विषय में कोई निश्चित जानकारी नहीं है किंतु भिन्न-भिन्न अनुदेशकों ने अपनी रूचि के अनुसार भिन्न-भिन्न स्थानों को उनका जन्म स्थान माना है। योगी संप्रदाय विष्कृति में उन्हें गोदावरी तीर के किसी चंद्र गिरी में उत्पन्न बताया गया है। नेपाल दरबार लाइब्रेरी में एक परवर्ती काल का गोरक्षसहस्रनाम स्त्रोत छोटा सा ग्रंथ है जिसमें उल्लिखित एक श्लोक के अनुसार दक्षिण दिशा में कोई बड़व नामक देश है, वही महामंत्र के प्रसाद से महा बुद्धिशाली गोरक्षनाथ प्रादुर्भूत हुए थे।

अस्ति याम्यां दिशिकश्चिदेशः बड़व संज्ञकः ।
तत्राजनि महाबुद्धिर्महामंत्र प्रसादतः ॥ [2]

पस्तुत श्लोक में बड़व शायद गोदावरी तीर के प्रदेश का वाचक हो सकता है। गोरक्षनाथ और उनके द्वारा प्रभावित योग मार्गी ग्रंथों के अवलोकन से स्पष्टतः पता चलता है कि गोरक्षनाथ ने योगमार्ग को बहुत ही व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने शैव प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सिद्धान्तों के आधार पर बहुधा विस्रस्त काया योग क साधनों को व्यवस्थित किया है। गोरक्षनाथ ने जिस हठयोग का उपदेश दिया है वह पुरानी परंपरा से भिन्न नहीं है। शास्त्र ग्रंथों में हठयोग साधारण तक प्राण निरोध प्रधान साधना को ही कहते हैं। सिद्ध सिद्धांत पद्धति हश्का अर्थ सूर्य तथा ठशका अर्थ चंद्रमा से लिया गया है। सूर्य और चंद्र के योग को ही हठयोग कहते हैं।

हकारः कथितः सूर्यष्ठकारश्चन्द उच्यते ।
सूर्याचंद्रमसोर्योगात हठयोगी निगदयते ॥ [3]

इस श्लोक के अनुसार सूर्य से तात्पर्य प्राणवायु से है और चंद्र से अपान वायु का इन दोनों का योग अर्थात् प्राणायाम से वायु का निरोध करना ही हठयोग कहलाता है। दूसरी व्याख्या के अनुसार सूर्य इड़ा नाड़ी को कहते हैं और चंद्र पिंगला को, इड़ा और पिंगला नाड़ियों को रोककर सुषुम्मना मार्ग से प्राण वायु के संचारित करने को ही हठयोग कहते हैं। हठयोग के दो भेद बताए गए हैं, प्रथम में आसन प्राणायाम तथा धौति आदि षट्कर्म का विधान है. इसे करने से नाड़ियां शुद्ध होती हैं। शुद्ध नाड़ी में पूरित वायु मन को निश्चल करता है, इसके पश्चात् परम आनंद की प्राप्ति होती है। दूसरे इड़ा और पिंगला नाड़ियों को रोककर सुषुम्मना नाड़ी से प्राण वायु केसंचारित करने को ही हठयोग कहते हैं। हठयोग के दो भेद बताए गए हैं, प्रथम में आसन,

प्राणायाम तथा धौति आदि षट्कर्म के विधान है, इसे करने से नाड़ियां शुद्ध होती हैं। शुद्ध नाड़ी पूरित वायु मन को निश्चल करता है, इसके पश्चात् परम् आनंद की प्राप्ति होती है। दूसरे भेद में कहा गया है कि नासिका के अग्रभाग में दृष्टि निर्बद्ध कर आकाश में कोटि सूर्य के प्रकाश को स्मरण करना चाहिए तथा श्वेत, पीत, उक्त एवं कृष्ण रंगों का ध्यान करना चाहिए। ऐसा करने से साधक चिरायु होता है तथा हटात् ज्योतिर्मय में होकर शिव रूप हो जाता है । यह सिद्ध सेवित मार्ग है।

अतः इसे हठयोग कहा गया है। 4 गोरक्षनाथ का लक्ष्य था कि समाज निर्वेद, समरस और सुखी बने तथा आत्म तत्व का बोध सब में हो। नाथपंथी योग साधना द्वारा सात्विक आध्यत्मिक जीवन का आदर्श बने और सर्वसमाज, सज्जन, संतोषी, संयमी, स्नेहिल, अपरिग्रह और सम्भाव युक्त बने। भारतीय चिंतन को गोरक्षनाथ की वह बहुत बडी देन है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. नाथ समाज के सभी भाइयों को एक मंच पर लाना।
2. नाथ जोगी, योगी समाज के लोगों को जोड़ना तथा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक उन्नति के लिए प्रोत्साहित करना।
3. शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना। शिक्षा का महत्व बताना तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा देनो के लिए प्रेरित करना।

साहित्य का पुनरावलोकन

शिक्षा पुराण में कहा गया है कि गोरक्षनाथ भगवान शिव के अवतार थे।

गोरखगीता में कहा गया है कि- गोरक्षनाथ ने इन्द्राणी के पतिव्रत की रक्षा में सुराचार्य बृहस्पति की सहायता की थी।

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि- गोरक्षनाथ शंकराचार्य के बाद दूसरे महाशक्तिशाली महापुरूष थे।

'नाथ सम्प्रदाय' उन साधकों का सम्प्रदाय है जो 'नाथ' को परमतत्व मानकर उनकी प्राप्ति के लिए योग साधना करते थे तथा दीक्षा प्राप्त होने के पश्चात् अपने नाम के अन्त में नाथ उपाधि खोज लगाते थे। नाथ सम्प्रदाय से सम्बद्ध साहित्य में 'नाथ शब्द के दो अर्थ प्राप्त होते हैं- परमतत्व या ब्रह्म, गुरु। 'नाथ' शब्द पर विचार करते समय "चैरासी सिद्ध और नवनाथ" की चर्चा प्राप्त होती है। अब यहाँ प्रश्न यह उठता है कि सिद्धों की संख्या केवल 84 ही क्यों तथा नवनाथों को 84 से अलग क्यों स्वीकार किया गया है। विभिन्न मतानुसार 84 सिद्धों का सम्बन्ध 84 लाख योनियों से माना गया है। नाथ सिद्धों की संख्या भिन्न-भिन्न रूपों में प्राप्त होती है। सभी सूचियों में सभी सिद्धों के नाम समान रूप से नहीं प्राप्त होते हैं। नाथ सिद्धों की विभिन्न सूचियों के कारण यह निर्णय करना अत्यन्त दुष्कर है कि इन सिद्धों में कितने नाथ सिद्ध हैं। विभिन्न मतों में विवेचनोपरान्त यह सिद्ध होता है कि सबसे अधिक सिद्ध नामों में मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, आदिनाथ, जालन्धरनाथ, चर्पटीनाथ, चौरंगीनाथ, कानिकानाथ, भर्तृहरिनाथ एवं गोपीचन्द्रनाथ का नाम प्राप्त होता है।

नाथ पंथियों का मुख्य संप्रदाय गोरखनाथी योगियों का है। इन योगियों को कनफटा और दर्शनी साधु कहा जाता है। कनफटा नाम पड़ने का प्रमुख कारण है कि ये लोग कान फाड़कर एक प्रकार की मुद्रा धारण करते हैं। जिसके कारण इन्हें 'दरसनी' साधु कहा जाता है। यह मुद्रा विभिन्न धातुओं और हाथी दाँत के होते हैं जो महन्त धनवान होते हैं वे लोग सोने की मुद्रा धारण करते हैं। गोरखनाथी सम्प्रदाय के लोग पूरे भारतवर्ष में पाये जाते हैं। पंजाब, हिमालय, बंगाल और मुम्बई में ये लोग 'नाथ' कहे जाते हैं। ये लोग जो मुडा धारण करते हैं वे दो प्रकार के होते हैं कुण्डल तथा दर्शन। 'दर्शन' का सम्मान अधिकार है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इसे धारण करने वाले ब्रह्म का साक्षात्कार कर चुके हैं। कुण्डल को पवित्री के नाम से भी जाना जाता है।

गोरखनाथी सम्प्रदाय के लोग मुख्यतः बारह शाखाओं में विभाजित होते है गोरक्षनाथ ने स्वयं विभिन्न नाथपंथियों को एकत्रित करके इन्हें बराबर शाखाओं में विभक्त किया। ये बारह पंथ हैं- सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपंथ, नरेश्वरी, कन्हड़, कपिलानी, बैराग, माननाथी, आईपंथ, पागलपंथ, धजपंथ तथा गंगानाथी। बारह पंथों के कारण ही इन्हें शंकराचार्य के दशनामी संयासियों की भाँति 'बारह पंथी' योगी कहा जाता है। प्रत्येक पंथ का विशेष स्थान है, जिसे ये लोग अपना पुण्य क्षेत्र मानते हैं। प्रत्येग पंथ के लोग किसी पौराणिक देवता या महाकाल को अपना आदिप्रवर्तक मानते है।

गोरखनाथी मेखला, श्रंृगी, सेली, गूदरी खप्पर, कर्णमुद्रा, बाप्पंबर झोला आदि चिन्ह धारण करते हैं। कान फड़वाने की प्रथा का प्रारम्भ किस प्रकार हुआ इस विषय में नाना प्रकार की दन्त कथाएँ प्रचलित हैं कुछ का मानना है कि मत्स्येन्द्रनाथ ने इस प्रथा का प्रवर्तन किया। इन्होने शिव के कानों में कुण्डल देखा और उसे प्राप्त करने के लिए तपस्या की। कुछ लोगों का मानना है कि गोपीचन्द्र की प्रार्थना पर जालन्धरनाथ ने इस पंथ के योगियों को अन्य सम्प्रदाय वालों से विशिष्ट करने के लिए इस पंथ को चलाया था। कुछ लोगों का मानना है कि गोरक्षनाथ ने भरथरी का कान फाड़कर इस प्रथा को चलाया था। भरथरी के कान में गुरू ने मिट्टी का कुण्डल पहनाया था। आज भी बहुत से योगी मिट्टी का कुण्डल धारण करते हैं। गोरखपंथी लोग किसी शुभ या विशेष दिन को खासकर बसंत पंचमी को कान को चरवाकर मंत्र के संस्कार से इस मुद्रा को धारण करते हैं।

नाथ संप्रदाय गुरु गोरखनाथ द्वारा स्थापित किया गया था । गुरु गोरक्षनाथ एक सिद्ध योगी और गुरु थे इन्हें भगवान शिव का अंश भी कहा जाता था । इनके गुरु का नाम मत्स्पेन्द्राथ था | गोरक्षनाथ के नाम पर गोरक्षनाथ जिले का नाम पड़ा | इन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया। इनके चमत्कार आज

भी विख्यात है । यदि वर्तमान सन्दर्भ में देखा जाए तो नाथ संप्रदाय के कई योगी राजनितिक पटल पर अच्छे कार्य करते रहे हैं और कर रहे हैं । इनके साथ – साथ इस सम्प्रदाय के द्वारा कई शिक्षण संस्थाएँ एवं सवास्थ्य केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। गोरखनाथ मठ इसका उदाहरण हैं । उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ महायोगी गुरु गोरक्षपीठ द्वारा प्रवृति नाथ पंथ की सर्वोच्च पीठ श्री गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर के पीठाधीश्व महन्त हैं जो अनेक सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, सांकृतिक और लोक कल्याणकारी अभिपानों के संचालक हैं ।

वर्ष 2018 में अक्टूबर माह में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ के सहयोग से महराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़ गोरखपुर में नाथ पंथ पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किया गया ।

वर्ष 2021 में 20 मार्च से 22 मार्च 2021 तक गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में तीन दिवसीय अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन नाथ पंथ पर किया गया इसका उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. राजेश सिंह ने बताया कि गोरख्क्पुर विश्वविद्यालय में शोधकेंद्र बनने के बाद अब रूस, स्पेन, नेपाल और अमेरिका में भी गोरखनाथ शोधकेन्द्र स्थापित करने की कवायद चल रही हैं।

भारतीय आध्यात्मिक जीवन को साधना के सकारात्मक आरोहण अथवा प्रगतिपथ पर अग्रसर होने के लिए सत्साधनों को जितना सुन्दर व दिव्य मार्ग महर्षि पतंजलि ने दिया है, वह अपने आप में अप्रतिम है। उनका 'पातंजलि योग दर्शन' ग्रन्थ एक अपौरूषेय कृति है तथा भारतीय वाङ्मय की एक अमूल्य विधि है।

इस कृति ने मार्ग दृष्टा ऋषि दृष्टा ने योग को एक अनुशासन के रूप में स्थापित किया है तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ को समाधि, साधन, विभूति तथा कैवल्य आदि पादों में विभक्त किया है ग्रन्थ के प्रारम्भ में ऋषि कहता है-

"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।[1]

समाधि पाद सूत्र-2

अर्थात् योग से चित्त वृत्तियों का निरोध होता है। सत्वगुण सच्चिदानन्दघन के गुणों में उभयनिष्ठ होने से योग पथ पर आगे बढ़नें में सहायक होता है और इस चित्तवृत्ति के निरोध हो जाने का परिणाम यह होता है कि यही जीवात्मा सर्वदृष्य ईश्वर के स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर प्रशान्त होकर आनन्द लाभ प्राप्त करता है।

"तदा द्रष्टु स्वरूपेडवस्थानम्।"[2]

समाधि पाद सूत्र 3

ऐसी मान्यता है कि मनुष्य में क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरूह पाँच प्रकार की चित्त भूमियां पायी जाती हैं। प्रथम दो प्रकार की चित्त भूमियाँ इस साधना की दृष्टि से सर्वथा अनुपयुक्त होती है।

पंचविधं निर्माण चितं जन्मौषधिमन्त्रतपः समाधिजा सिद्धय इति।

इस सूत्र के अनुसार चित्त निर्माण जन्म, औषधिय, मन्त्र, तप और समाधि आदि पाँच प्रकार के साधनों से सम्पादित होता है। चित्तवृत्तियों के सम्बन्ध में महर्षि जी का स्पष्ट संकेत है कि-

प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रा स्मृतयः।"[3]

समाधि पाद सूत्र- 6

अर्थात् प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्र व स्मृति आदि से संयुत होकर चितभूमियाँ इन्ही स्वरूपों के अनुसार क्रिया सम्पादित करती है। मार्गदृष्टा ऋषि ने यह भी संकेत दिया है कि उस निर्विकल्पावस्था की समाधि को पाने का मार्ग योग ही है।

"ईश्वरप्रणिधानाद्वा।"4

समाधि पाद सूत्र- 23

अर्थात् ईश्वर प्रणिधान से भी उसे प्राप्त किया जा सकता है। इस सूत्र से भक्ति की ओर संकेत कर सूत्रद्रष्टा ने लोक कल्याण एवं साधकों के लिए व्यापक दिशाबोध के व्यावहारिक ज्ञान को अपने योग दर्शन के माध्यम से सम्पादित व लोकार्पित किया है।

योग दर्शन से आत्म साक्षात्कार अर्थात् मोक्ष लाभ की प्रक्रिया साधकों को ही प्राप्त नहीं हो जाती है, इसके लिए उन्हें कुछ बन्ध (मूल, उड्डियान, जालन्धर) मुद्रायों (महामुद्रा, खेचरी, विपरीतकरणी, योनि, शाम्भवी, अगोच, भूचरी, भरोली व ब्रजोली आदि मुद्राओं) तथा विशिष्ट योगांगो का अनुपालन करना आवश्यक होता है। ये योगांग आठ प्रकार के हैं, जो निम्नलिखित हैं-

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणा ध्यान समाध्यों द्रष्टङ्यावानि।[5]

साधन पाद सूत्र-29

अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ साधनाएँ योगांग कहलाती हैं। जिनके सम्यक अनुपालन से साधक को अन्ततः विवेकख्याति (मोक्ष) की प्राप्ति होती है। वस्तुतः इन प्रक्रियाओं के श्रेष्ठ अनुपालन से आत्मा अन्ततः परमात्मा से संयुत हो जाती है। आत्मा जब अपने स्वरूप में स्थित हो जाती है तो यही, सत्य परमात्मा अथवा ब्रह्म दर्शन कहलाता है।

योग में सम्यक सफलता के लिए आवश्यक होता है कि उसके सभी अंगों का पूर्ण निष्ठा के साथ पूरे संयम, दृढ़ता व उत्साह के साथ पालन किया जाय, जिससे सफलता असंदिग्ध रहे। मानव जीवन के परम लक्ष्य सुख, शान्ति व परमानन्द मात्र योग और अध्यात्म को ही जीवन में ढालकर प्राप्त किया जा सकता है। विश्व के आत्मरूप बन्धुओं अपने स्वरूप को पाने के लिए अग्रसर हो। परमात्मा की कृपा बरस रही है, वह अपकों स्वयं अपने में मिलाकर। अपने जैसा बना लेने को आतुर है। अपना कदम आगे बढ़ाओ, जीवन धन्य हो जाएगा।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है-

योगस्थः कुरू कर्माणि संङग् व्यक्तवा धनंजय।
सिद्धयसिद्धयांः समो भूत्वा समत्वं योग उच्चयते॥
श्रीमद्भगवद्गीता 2/48

अर्थात् तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्यकर्मो को कर, क्योकि समत्व ही योग कहलाता है।

शिवपुराण के अनुसार गोरक्षनाथ शिवावतार थे। गोरक्षगीता में कहा गया है कि इन्द्राणी के पतिव्रत की रक्षा में गोरक्षनाथ ने सुराचार्य बृहस्पति की सहायता की थी। स्कन्दपुराण के केदारखण्ड मे नवनाथों में गोरक्षनाथ को शंकराचार्य के बाद दूसरा महिमाशाली व्यक्तित्व वाला महापुरूष घोषित किया। साधना की पवित्रता, चरित्र की परमोच्चता संयमपूर्ण जीवन की शक्तिमत्ता और आडम्बरहित जीवन की महिमा का उद्घोष गोरक्षनाथ ने किया था। (गोरक्षपद्धति 2/100)

गोरक्षनाथ ने षडंग योग को स्वीकार किया है अर्थात उन्होंने आसन के बाद पतंजलि के छः अंगों को स्वीकार किया है। गोरक्षनाथ के योग साधन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त पिण्डब्रलाण्डवाद है। सिद्ध सिद्धान्त पद्धति के अनुसार जो व्यक्ति या योगी पिण्ड में सम्पूर्ण चराचर का ज्ञान प्राप्त कर लेता है उसे पिण्ड संवित्ति कहते ंहैं। पिण्ड के अन्तर्गत जो कुछ नहीं है। वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। नाथ योग साधना में शिवापदिष्ट महायोग ज्ञान का ही महत्व स्वीकृति है। गोरक्षपद्धति में गोरखनाथ जी का कथन है कि योगशास्त्र आदिनाथ (भगवान शिव) के मुखकमल से निःसृत है। उसी का नित्य मनन और चिन्तन करना चाहिए।

योगशास्त्रं पठेन्नित्यं किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
यत्स्वयं चादिनाथस्य निर्गतं वदनाम्बुजात्॥

भारत में भारत में नाथ परंपरा सिद्ध परंपरा का एक विकासवादी चरण था। सिद्ध परंपरा ने योग का पता लगाया जिसमें मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक तकनीकों के सही संयोजन से सिद्धि की प्राप्ति होती है गोरक्षनाथ का संबंध प्रायद्वीपीय भारत के दक्कन क्षेत्र से था जबकि अन्य लोगों का संबंध पूर्वी भारत से है नाथ संप्रदाय के योगी को सबसे पुरानी प्रतिमा कोकण क्षेत्र में पाई पाई गई है भक्ति फूलन से जुड़े संत कबीर ने भी नाथ योगियों की अत्यधिक प्रशंसा की है।

निष्कर्ष

गुरू गोरक्षनाथ का नाथयोग एक साधनापरख तत्वचिन्तन है वह बौद्धिकता की विडम्बना में नहीं पड़ता। उनका मानना है कि पिण्ड ही पृथ्वी आदि पंचभूतों का केन्द्र है। महायोगी गोरक्षनाथ देश, काल से पूरे योगपुरुष है, उनका अस्तित्व सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक है। गोरक्षनाथ जी ने उस योग की साधना पर बल दिया, जो शिव द्वारा उपदिष्ट है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *समाधिपाद सूत्र-2*
2. *समाधिपाद सूत्र-3*
3. *समाधिपाद सूत्र-6*
4. *समाधिपाद सूत्र-23*
5. *समाधिपाद सूत्र-29*
6. *श्रीमद्भगवद्गीता-2/48*
7. *गोरक्ष पद्धति-2/100*